राजस्थान की प्रमुख जनजातियाँ

- ऐसी जाती / समुदाय / वर्ग जो अपनी मुख्य मुल विचारधारा से पिछड गया है वह जनजाति के अन्तर्गत आता है।

- ये वर्ग आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक सभी दृष्टिकोणो से पिछडा हुआ है।

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 के धारा 366(25) के अन्तर्गत किसी भी जाति / समुदाय / समाज को 'जनजाति' में शामिल करने का अधिकार राष्ट्रपति को प्रदान किया गया है।

- राजस्थान में कुल 12 जनजातियाँ मिलती है इनमें 6 प्रमुख है →

(1) भील
(2) मीणा
(3) गरासिया
(4) सहरिया
(5) डामोर
(6) कथौड़ी

NOTE ⇒ कंजर, सांसी व कालबेलिया अनुसुचित जनजाति की श्रेणी में नहीं आते है जबकि इन्हे अनुसुचित जाति में शामिल किया गया है।

★ राजस्थान में कुल जनजाति जनसंख्या ⇒ 92.38 लाख [2011]

★ RJ की कितनी % आबादी अनुसुचित जनजाति के अन्तर्गत ⇒ 13.5%

★ अनुसुचित जनजाति की संख्या की दृष्टि से RJ का स्थान ⇒ 6th [2011]

Note ⇒ अधीनस्थ बोर्ड द्वारा RJ का जनजाति की दृष्टि से भारत में 4th / चौथा स्थान माना है।

★ RJ की कुल ग्रामीण जनसंख्या में ST ⇒ 16.9% [86 लाख]

★ RJ की कुल नगरिय जनसंख्या में ST ⇒ 3.2% [5.45 लाख]

अनुसुचित जनजाति (संख्या)

- सर्वाधिक
  - (1) उदयपुर (15.25L)
  - (2) बांसवाड़ा (13.7L)
- न्युनतम
  - (i) बीकानेर (7779)
  - (ii) नागौर (10,000)

अनुसुचित जनजाति (%)

- सर्वाधिक
  - (i) बांसवाड़ा (76.4%)
  - (ii) डुंगरपुर (70.8%)
- न्युनतम
  - (1) नागौर (0.3%)
  - (2) बीकानेर (0.3%)
  - (3) चुरु (0.6%)

ST लिंगानुपात (948)
- नगर → 951
- ग्रामीण → 893

SC लिंगानुपात (923)
- नगर → 923
- ग्रामीण → 922

★ राजस्थान में अनुसूचित जनजातियाँ क्षेत्र ⇒

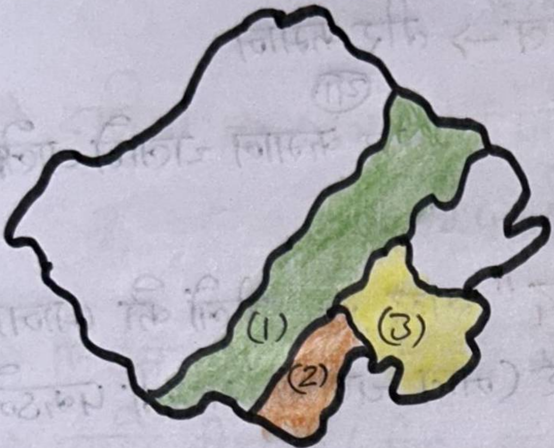

प्रधानता ⇒
(1) अरावली पर्वतीय प्रदेश
(2) दक्षिणी राज०
(3) हाड़ौती प्रदेश व अरावली से सम्बन्धित पूर्वी RJ के जिलें।

(A) पूर्वी व द० पूर्वी भाग ⇒

→ यहाँ ST का 50% भाग निवास करता है।

→ मुख्यत! - मीणा, सहरिया, सांसी, कंजर, कथौड़ी etc

(B) दक्षिण RJ ⇒

→ यहाँ ST का 45% भाग निवास करता है।

→ मुख्यत : भील, मीणा, डामोर, गरासिया, कथौड़ी etc.

(C) पश्चिमी RJ ⇒

→ यहाँ ST का 5% भाग निवास करता है।

→ यहाँ भील व मीणा निवास करते हैं।

(1) भील जनजाति

- RJ की दुसरी सबसे बडी
- RJ की प्राचीनतम

- भील शब्द की उत्पत्ति → द्रविड़ भाषा → बील → तीर कमान

का

तीर कमान चलाने वाले लोग

★ भीलो का उल्लेख
- → महाभारत में → "निषाद" शब्द से भीलों को जाना गया है (नाव चलाने / मछली पकडनें)
- → कर्नल जेम्स टॉड → "वनपुत्र" की संज्ञा दी।
- → मेवाड़ का इतिहास → मेवाड़ के प्रतीक में भीलों को स्थान मिला।
  - भीलों द्वारा महाराणा प्रताप को दिया गया सहयोग इतिहास मे स्वर्णिम अक्षरों से लिखा गया है।

★ निवास स्थान ⇒ उदयपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, चित्तौडगढ़, डुंगरपुर, सिरोही आदि।

★ सर्वाधिक संख्या में ⇒ उदयपुर

★ सर्वाधिक प्रतिशत में ⇒ बांसवाड़ा

★ सर्वाधिक RJ क्षेत्र में ⇒ दक्षिणी RJ क्षेत्र में

★ पितृ सत्तात्मक परिवार प्रणाली।

★ घर ⇒ "कु टापरा"

★ मोहल्ला ⇒ "फला"

★ गॉव ⇒ "पाल"

★ गॉव का मुखिया ⇒ पालवी, तदवी

★ पंचायत का मुखिया ⇒ गमेती

★ अर्थव्यवस्था ⇒ शिकार करना, कृषि कार्य

★ वालरा / चिमाता ⇒ भील जनजाति द्वारा की जाने वाली स्थानान्तरित कृषि।

★ दाजिया ⇒ जब भील जनजाति द्वारा खुले मैदानों में स्थानान्तरित कृषि की जाती है। [मुख्यत: वागडी भील द्वारा]

-> निर्धन जनजाति के रूप में भील होते हैं।

-> अच्छे तीरदांज / तीर चलाने में निपुर्ण जनजाति है।

NOTE ⇒ पृथ्वीराज चौहान को शब्दभेदी बाण भी भील जनजाति द्वारा सिखाया गया था।

★ मौताणा ⇒ यह एक जुर्माना / हरजाना राशि है।
- जब किसी भील जनजाति के व्यक्ति की संदिग्ध अवस्था में मृत्यु होती है तब जिसकी जमीन पर मृत्यु हुई है उसे मृतक के परिवार को धनराशि देनी होती है।

★ वागडी भील ⇒ मैदानी भाग में रहने वाले भील।

★ पालवीय भील ⇒ पर्वतीय ढलानों पर रहने वाले भील।

★ भील पुरुष वस्त्र ⇒

पोत्या -> सफेद रंग का साफा

फेटा -> लाल / पीला / केसरिया रंग का साफा

लगोटी / खोयतु -> कमर में पहने जाने वाला वस्त्र

फालु -> कमर में बांधने वाला वस्त्र

ढेपाड़ा -> घुटनों तक पहनी जाने वाली तंग धोती

★ भील महिलाओ के वस्त्र ⇒

कछावू → घुटनो तक का घाघरा

पिरिया → पीले रंग का लहंगा

सिन्दुरी → लाल रंग की ओढ़नी / साड़ी

तारा भांत की ओढ़नी → भीलों की सर्वाधिक प्रचलित ओढ़नी

परिजनी → पीले रंग की पैरों में पहने जाने वाली चुड़ियाँ

★ महत्त्वपुर्ण तथ्य ⇒

टोटम ⇒ भील जनजाति के अराध्य देवता
- टोटम के रूप में "वृक्षों की पुजा" की जाती है।

आमजा माता / अमजा माता ⇒ कुल देवी

कांठी / कांडी ⇒ - यह भीलो का अप्रिय शब्द है।
- इस शब्द को सुनकर भील नाराज हो जाते है।
- अर्थ - तीर चलाने वाला

पाड़ा ⇒ - यह भीलो का प्रिय शब्द है।
- अर्थ - शक्तिशाली

फायरे - फायरे ⇒ रणघोष के रूप में प्रयुक्त शब्द।

छेड़ा फाड़ना ⇒ - तलाक का तरिका।
- पुरुष द्वारा अपनी पत्नी की ओढ़नी का थोड़ा हिस्सा फाड़कर तलाक देना।

★ प्रमुख मेले ⇒

(1) बेणेश्वर धाम – नवातापरा (डूंगरपुर) - आदिवासियों का कुंभ

(2) मानगढ़ धाम – बांसवाड़ा

(3) घोटिया अम्बा – बांसवाड़ा

[2] मीणा जनजाति

→ RJ की जनसंख्या दृष्टि से सबसे बडी।

- मीणा शब्द की उत्पत्ति " मीन / मत्स्य " शब्द से हुई हैं।
- मीणा का उल्लेख = मीणा पुराण व मत्स्य पुराण
- निवास – जयपुर, दौसा व आसपास के जिलों में।
- ईष्टदेवी – जीण माता (शक्ति के उपासक)
- कुल देवता – बुझ देवता
- धर्म गुरु – मुनि मगन सागर
- आराध्य देव – भूरिया बाबा [नाणा रेलवे स्टेशन – पाली]
- सर्वाधिक शिक्षित जनजाति हैं।
- अर्थव्यवस्था – कृषि व अन्य व्यवसाय
- प्रमुख वर्ग – (1) जमींदार मीणा – कृषि व पशुपालन का कार्य
  (2) चौकीदार मीणा – राजघरानों की चौकीदारी का कार्य
- सामाजिक जीवन –
  - मोरनी माण्डना – विवाह की एक रस्म।

नाता प्रथा – पति की मृत्यु के बाद पत्नि का दुसरे स्थान पर वैवाहिक संबंध स्थापित करना।

गोद प्रथा – आपस में बालक – बालिका को गोद लेना।

छेडा फाड़ना –

* पटेल – समाज का मुखिया

* मीणाओं की 4 पंचायते होती है। जिसमें सबसे बडी पंचायत 84- पंचायत कहलाती है।

* मुनि मगन सागर के अनुसार मीना पुराण में 5200 गौत्र 32 तड. व 13 पाल का उल्लेख है।

[3.] गरासियां जनजाति

→ RJ की 3rd बडी जनजाति

- कर्नल जेम्स टॉड के द्वारा गरासिया शब्द की उत्पाति "गवास" शब्द से हुई। जिसका अर्थ "सर्वेन्ट / नौकर" होता है।
- यह अपनी उत्पाति चौहान राजपुतों से मानते है।
- निवास ⇒ सिरोही, उदयपुर, पाली (बाली)
  - भाखर क्षैत्र की मुल [सिरोही]
- पितृसत्तात्मक / पितृवंशीय परिवार
- आबादी की द्दष्टि से स्थान ⇒ 3rd
- 3 संस्कृतियों एवं सभ्यता का प्रभाव ⇒ GJ + RJ + मराठी
- सामाजिक जीवन :-

नक्की झील [आबु] – पवित्र झील

घेर – घर

- गांव की सबसे छोटी इकाई - फलिया
- पंचायत का मुखिया - सहलोत

नृत्य - गौर नृत्य   लुर नृत्य   कुद नृत्य
मादल नृत्य   मोरिया नृत्य   दाह नृत्य

वाद्ययंत्र - बांसुरी, नगाड़ा, अलगोजा

आदर्श पक्षी - मोर

प्रमुख व्यवसाय - कृषि व पशुपालन [

★ झावरी कृषि - सामुहिक कृषि

मेला → मनखारों का मेला

- इनका समाज स्तरीय होता है अर्थात् सामाजिक रूप में क्रम दिखाई देता है जिसे नियात कहा जाता है → मोटी नियात
नेनकी नियात
निचली नियात

- त्योहार - आखातीज से त्योहार का प्रारम्भ
होली व गणगौर प्रिय त्योहार

- एकाकी परिवार प्रणाली

- प्रेम विवाह सर्वाधिक प्रचलित

- मृतक का अंतिम संस्कार मृत्यु के 12 वें दिन किया जाता है।

- विवाह के प्रकार ⇒ (1) मोरबांधिया (4) मेलबी
(2) पहरावना (5) खेवणी
(3) ताणूना

NOTE ⇒

	Male		Female
भील गरासिया ⇒	गरासिया	+	भील
गमेती गरासिया ⇒	भील	+	गरासिया

[4] सहरिया जनजाति → RJ की 4th सबसे बड़ी

- सहरिया शब्द की उत्पति फारसी भाषा के शब्द "सहर" से हुई है। जिसका अर्थ है - जंगल में विचरण करना।

- RJ की 99.2% सहरिया जनजाति शाहबाद व किशनगंज तह. (बारा) में निवास करता है।

- कई गौत्र राजपुतों के समान - चौहान, सोलंकी, देवड़ा, बांघेल etc.

- भारत सरकार द्वारा 1977-78 में "आदिम समूह जनजाति" में शामिल किया।

- पुजा ⇒ तेजाजी
- कुल देवी ⇒ कोडिया माता
- धारी संस्कार प्रचलित → मृत्यु के बाद यह सुनिश्चित करना कि मृतक ने किस जीव के रूप में जन्म लिया है।
- प्रमुख मेले ⇒
  (1) सीता बाड़ी का मेला → सीताबाड़ी (बांरा) → ज्येष्ठ अमावस्या
  (2) कपिल धारा का मेला → सीताबाड़ी (बांरा) → कार्तिक पुर्णिमा

★ प्रमुख लोक नृत्य ⇒ शिकारी, इन्द्रपरी, लहंगा, झला नृत्य

★ झोपड़ी → हथाई / बंगला

★ बस्ती → सहराना

★ गांव → सहरोल

★ घर → टापरी / टोपा

★ सामाजिक जीवन ⇒

- भीख मांगना वर्जित है।
- मृतक का श्राद्ध नहीं करते है।
- दुर्गा माता की पुजा = नवरात्रा में विशेष पुजा
- दहेज प्रथा प्रचलित नहीं है।
- विधवा विवाह व नाथा प्रथा प्रचलित है।
- सबसे बड़ी संस्था पंचायत है पंचायत का मुखिया कोतवाल कहलाता है। [वाल्मीकि मंदिर में आयोजन]
- पर्दा प्रथा केवल घर में प्रचलित है।
- बहु पत्नी प्रथा प्रचलित है।
- लट्ठमार होली प्रचलित है।
- हिन्दु समाज के समान फेरे 6-फेरे वधु व 1-फेरा वर द्वारा।
- सबसे कम साक्षरता दर।
- वधु मूल्य प्रथा प्रचलित।
- लीला - मोरिया संस्कार - विवाह के समय

[5.] कथौडी जनजाति

नामकरण ⇒ कत्था तैयार करने वाली जाति कथौडी है। [खेर वृक्ष से]

मुलत: ⇒ ~~मुम्बस~~ महाराष्ट्र

- सबसे कम शैक्षिक विकास हुआ है।

क्षैत्र ⇒ कोटड़ा, उदयपुर

★ सामाजिक जीवन ⇒

- जंगलों में विचरण करने वाले व घुमक्कड़ जीवन यापन।
- घर ⇒ खोला (घास व काष्ठ से निर्मित)
- मांसाहारी जनजाति।
- पुर्णत: जंगलों पर आश्रित है।
- नृत्य ⇒ मावलिया - नवरात्रा में पुरुषों द्वारा
  होली नृत्य - केवल महिलाओं द्वारा
- पूर्वी RJ में ⇒ बांरा, कोटा, S.M, करौली व भरतपुर

- फड़का ⇒ महिलाओं द्वारा मराठी अंदाज में साड़ी पहनना।
- शव को दफनाते हुए मुंह में चावल व हाथ में पैसे रखते हैं।
- शरीर पर गोदना → महिला व पुरुष दोनों समाज
- समाज का मुखिया → नायक
- प्रचलित प्रथा - ~~नाता~~ नाता प्रथा
  विधवा पुनर्विवाह
  मृत्युभोज

- प्रमुख देवता – डुँगरदेव
ग्रामदेव
वाद्यदेव

- प्रमुख देवी – भारी माता
कंसारी माता

[6.] डामोर जनजाति

- उपनाम ⇒ डामरिया
- मूलत: जनजाति ⇒ GJ
- RJ में विस्तार ⇒ डुंगरपुर – सीमलवाड़ा तह.
बांसवाड़ा

- सामाजिक जीवन ⇒ - एकाकी परिवार प्रथा
- गाँव का मुखिया ⇒ मुखी
- कृषि व पशुपालन का कार्य मुख्य।
- महिला व पुरुष समाज आभुषण पहनते हैं।

- प्रमुख मेलें ⇒

(1) छैला बावजी का मेला → पंचमहल [GJ]
(2) ग्यारस की रैवाड़ी → सीमलवाड़ा [डुंगरपुर]

[7] कंजर जनजाति

-> इन्हें SC श्रेणी में रखा जाता है।

-> कंजर शब्द "काननचार" शब्द से बना है। जिसका अर्थ जंगल में विचरण करने वाला।

-> क्षेत्र => कोटा, बूँदी, बांरा, झालावाड़, SM, भीलवाड़ा व अजमेर

-> यह घुमन्तु जाति है।

-> ये मोर का मांस सर्वाधिक पंसद करते हैं।

* कुल देवी => चौथ माता

-> यह हाकम राजा का प्याला पीकर कभी झूठ नहीं बोलते हैं।

[8] साँसी जनजाति

क्षेत्र => भरतपुर + अजमेर

-> इन्हें SC श्रेणी में रखा गया है।

-> यह भी खानाबदोश जीवन जीते हैं।

अर्थव्यवस्था -> हस्तशिल्प व भोजन संग्रह

संरक्षण देवता -> भाकर बावजी